# शिव, शिवरात्रि और जागरण का आध्यात्मिक रहस्य

हमारे देश में शिवरात्रि का पर्व हर वर्ष मनाया जाता है। इस दिन शिवभक्त, शिव-मंदिरों में जाकर शिवलिंग पर लोटी, बेल-पत्र आदि चढ़ाते, पूजन करते, उपवास करते तथा रात्रि को जागरण करते हैं। शिवरात्रि को सार्थक बनाने के लिए यह जानना आवश्यक है कि शिव कौन हैं तथा उनकी रात्रि क्यों मनाते हैं? परमात्मा शिव के ऊपर बेल-पत्र चढ़ाना, उपवास तथा रात्रि जागरण करना एक विशेष कर्म की ओर इंगित करता है। क्योंकि जो कर्मकाण्ड मनुष्यों द्वारा किये जाते हैं उनके पीछे आध्यात्मिक रहस्य समाया होता है जिसमें समूची मानवजाति तथा व्यक्तिगत स्तर पर मनुष्य के हित और अनहित की कड़ी निहित होती है। आज के सन्दर्भ में केवल आडम्बर और परम्परायें ही रह गयी हैं। इसलिए आवश्यकता है कि इस महान पर्व के महत्त्व तथा इसके आध्यात्मिक यादगार को जानें-पहचाने व अपने जीवन में अमल करने की पहल करें।

भारत के कोने-कोने में शिव के लाखों मंदिर हैं जिनमें शिव की प्रतिमा 'शिवलिंग' के रूप में पाई जाती है। कश्मीर में अमरनाथ, गुजरात के सौराष्ट्र में सोमनाथ, वाराणसी में विश्वनाथ, उज्जैन में महाकालेश्वर तथा नेपाल में पशुपतिनाथ के रूप में प्रसिद्ध शिव के मंदिर हैं। इन शिवालयों के नाम परमात्मा के दिव्य कर्त्तव्यों के परिचायक हैं जिनसे संकेत मिलता है कि शिव ही परमात्मा हैं। कहा जाता है कि दक्षिण भारत तमिलनाडू में रामेश्वर के स्थान पर श्री राम ने तथा वृन्दाबन में गोपेश्वर के स्थान पर श्रीकृष्ण ने भी शिव का पूजन किया था। यह वृत्तान्त भी इस सत्यता के द्योतक हैं कि शिव ही देवों के देव एवं श्री राम और श्रीकृष्ण के भी परमपिता परमात्मा हैं। शिव की प्रतिमा का शिवलिंग के रूप में दिखाया जाना सिद्ध करता है कि परमात्मा निराकार है जिसका देवी-देवताओं जैसा कोई साकार पुर्ल्लिंग अथवा स्त्रीलिंग का स्वरूप नहीं वरन ज्योतिर्लिंग निराकार स्वरूप है। इसलिए भारत के 12 सुप्रसिद्ध शिवालयों को 'ज्योतिर्लिंगम मठ' कहा जाता है। ब्रह्मा, विष्णु एवं शंकर तीन सूक्ष्म व आकारी देवताओं के भी रचयिता होने के कारण निराकार परमात्मा शिव को त्रिमूर्ति भी कहते हैं।

शिवलिंग पर जो तीन लकीरों वाली त्रिपुण्डी होती है वह शिव परमात्मा के त्रिमूर्ति, त्रिनेत्री, त्रिकालदर्शी एवं त्रिलोकीनाथ होने का प्रतीक है। शिव को 'शम्भू' अर्थात 'स्वयं भू' तथा 'सदा शिव' भी कहा जाता है जिसका अर्थ है कि शिव ही परमात्मा हैं जिसका कोई रचयिता नहीं। शिव का शाब्दिक अर्थ ही है 'कल्याणकारी'। परमात्मा शिव ही पावन मनुष्य सृष्टि की स्थापना, पालना तथा पुरानी पतित सृष्टि से सर्व बुराइयों के विनाश के अपने तीन दिव्य कर्त्तव्यों द्वारा मनुष्य मात्र का कल्याण करते हैं अर्थात् सर्व को गति, सदगतिप्रदान करते हैं। इससे भी सिद्ध होता है कि शिव ही परमात्मा हैं।

**शिवरात्रि का रहस्य:** विचार की बात है कि जब सभी शरीरधारी देवताओं, महात्माओं आदि के स्मृति दिवस, जनमदिन के रूप में मनाये जाते हैं तो फिर शिव की ही रात्रि' क्यों मनाते हैं। उदाहरणार्थ, श्रीकृष्ण के जन्म का समय मध्य रात्रि माना जाता है तो भी जन्माष्टमी को श्रीकृष्ण का जन्मदिन ही कहेंगे। केवल शिव की ही 'रात्रि' मनाते हैं। इसका तात्पर्य क्या है? वास्तव में शिवरात्रि का परम पर्व स्वयं परमपिता परमात्मा के सृष्टि पर अवतरित होने की स्मृति दिलाता है। यहाँ 'रात्रि' शब्द अज्ञान-अन्धकार से होने वाले नैतिक पतन का द्योतक है। परमात्मा ही ज्ञान सागर हैं जो मानव मात्र को सत्य ज्ञान द्वारा अन्धकार से प्रकाश की ओर अथवा असत्य से सत्य की ओर ले जाते हैं। भगवानुवाच है कि जब सृष्टि पर अति धर्म ग्लानि हो जाती

है तब मैं परमात्मा स्वयं अवतरित होकर अधर्म का विनाश एवं सतधर्म की पुनर्स्थापना करके पतित आसुरी सृष्टि को पावन दैवी सृष्टि बनाता हूँ।

प्रश्न उठता है कि परमात्मा शिव सृष्टि चक्र में अपना यह दिव्य अलौकिक कार्य कब और कैसे करते हैं? विचार करेंगे तो स्पष्ट प्रतीत होगा कि परमात्मा शिव द्वारा स्थापना, पालना, विनाश का यह कर्त्तव्य सृष्टि चक्र में कलियुग-अन्त, सतयुग-आदि के संधि काल अथवा 'संगम' के समय ही चलता है क्योंकि सारे चक्र में यही समय विश्व नव निर्माण का सिद्ध होता है। इस समय परमात्मा शिव प्रजापिता ब्रह्मा के भाग्यशाली शरीर रूपी रथ (भागीरथ) में अवतरित होकर सतयुगी दैवी सृष्टि की स्थापना हेतु ईश्वरीय सत्य ज्ञान सुनाते हैं। परमात्मा साधारण मनुष्यों की तरह माता के गर्भ से जन्म नहीं लेते बल्कि अपने महावाक्यों अनुसार प्रकृति को अधीन करके ब्रह्मा तन में प्रवेश करके 'दिव्य जन्म' लेते हैं अर्थात् अवतरित होते हैं। परमात्मा के अवतरण के बारे में गीता में स्पष्ट रूप से कहा गया है कि परमात्मा जन्म-मरण और पाप-पुण्य आदि कर्मों से परे हैं। जो मनुष्य जिस रूप में उनकी पूजा करता है उसकी उसी रूप में इच्छा की पूर्ति करता है।

आज जबकि सृष्टि पर पुनः भ्रष्टाचार , अनाचार एवं अत्याचार सर्वत्र फैल चुका है और चारों ओर नैतिकता का पतन अपनी चरम सीमा को प्राप्त हो चुका है तो परमात्मा शिव मनुष्य मात्र को अज्ञान-निद्रा से जागृत करने के लिए पुनः प्रजापिता ब्रह्मा-वत्सों (ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्माकुमारियों) द्वारा सत्य ज्ञान देकर एवं सहज राजयोग सिखलाकर 'पवित्र बनो, राजयोगी बनो' का ईश्वरीय संदेश दे रहे हैं। यह संदेश परमात्मा के अवतरण की सच्ची घटना है। प्रत्येक धर्म तथा अध्यात्म प्रेमी को अपने तीसरे दिव्य नेत्र से वर्तमान दुनिया की जर्जर हालत और शास्त्रों में वर्णित कलियुग के अन्त और सतयुग के आदि के चिन्हों को पहिचान कर मनन कर लेना चाहिए। आज सभी लोगों को अन्तर्मन से यही महसूस हो रहा है कि यह कौन सा युग चल रहा है। क्योंकि आज के सन्दर्भ में घटने वाली घटनाओं ने मानवता और दानवता के भेद को भी नष्ट कर दिया है। मनुष्य अज्ञानता की अंधेरी रात में अपने विवेक का इस्तेमाल केवल विध्वंसक प्रवृत्तियों और अकल्याण के लिए कर रहा है।

शिवरात्रि पर सच्चा उपवास यही है कि हम परमात्मा शिव से बुद्धि योग लगाकर उनके समीप रहें। उपवास का अर्थ ही है उप + वास अर्थात समीप रहना। जागरण का सच्चा अर्थ भी काम, क्रोध आदि पांच विकारों के वशीभूत होकर अज्ञान रूपी कुम्भकरण की निद्रा में सो जाने से स्वयं को सदा बचाये रखना है क्योंकि यहाँ स्थूल निद्रा की बात नहीं है। यदि व्यक्ति स्थूल निद्रा में हो तो उसको कोई भी जगा सकता है परन्तु अज्ञान निद्रा में सोये व्यक्ति को केवल परमात्मा ही उठाता है। इसलिए शिवरात्रि के पर्व पर जागरण का महत्व है। तो आइये, हम सब इस आध्यात्मिक महत्त्व को जानकर शिवरात्रि को सार्थक मनायें।